पिगमेलियन की कहानी

पामेला एस्पेलैंड, चित्र: कैथरीन क्लीरी

लोगों ने हजारों वर्षों से पिगमेलियन की कहानी का आनंद लिया है. कलाकारों ने उसके बारे में चित्र बनाए हैं. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ नाम के एक अंग्रेजी लेखक ने उसके बारे में एक नाटक लिखा था. हो सकता है कि आपने वह फ़िल्म भी देखी हो जो उस नाटक पर बनी थी. उसका नाम था "माई फेयर लेडी".

यह उस कहानी का मूल संस्करण है. यह एक सुंदर और प्रतिभाशाली युवा मूर्तिकार की कहानी है जो बहुत दंभी यानि घमंडी था! उसका नाम पिगमेलियन था. और वो महिलाओं के प्रति विशेष रूप से दंभी था! "महिलाओं की किसे जरूरत है?" वो कहता था. "मुझे अपनी कला से प्यार है. और वो मेरे लिए काफी है"

लेकिन एक दिन पिगमेलियन ने एक ऐसी मूर्ति पर काम करना शुरू कर दिया जिसने अंत में पिगमेलियन को उसका सही स्थान दिखाया. नई मूर्ती, पिगमेलियन के द्वारा बनाई गई किसी भी मूर्ति से अधिक सुंदर थी. और इससे पहले कि उसे पता चलता था कि क्या हो रहा था, पिगमेलियन को अपनी बनाई मूर्ती से प्यार हो गया. वो ठंडे पत्थर के एक टुकड़े के प्यार में पागल हो गया! पिगमेलियन की कहानी आपको हंसने पर मजबूर कर देगी क्योंकि पिगमेलियन ने यह दिखावा करने की कोशिश की कि उसकी मूर्ति असली थी!

पिगमेलियन की कहानी

पामेला एस्पेलैंड

चित्र: कैथरीन क्लीरी

इस कहानी के बारे में

प्राचीन यूनान (ग्रीस) बहुत बड़ा तो नहीं था, लेकिन वो एक बहुत महत्वपूर्ण देश था. कुल मिलाकर, यूनानी राज्यों का क्षेत्रफल ऑस्ट्रिया के जितना बड़ा होगा. लेकिन इस छोटे से देश ने दुनिया को कई प्रसिद्ध लोग और नए विचार दिए.

प्राचीन यूनानी लोग काफी हद तक हमारे जैसे ही थे. 2,000 साल पहले, उनके बच्चे खेलते थे, स्कूल जाते थे और ओलंपिक खेल देखते थे. बड़े लोग काम करते थे. वे नाटक और कविताएँ लिखते थे. वे कानून बनाते थे. उनकी सरकार, पश्चिमी लोकतंत्र की शुरुआत थी.

लेकिन यूनानी लोग विज्ञान के बारे में उतना नहीं जानते थे जितना हम आज जानते हैं. इसलिए उन्होंने प्रकृति को समझाने के लिए मिथकों का इस्तेमाल किया. जब समुद्र में तूफान आया, तो उन्होंने कहा, "समुद्र के देवता पोसीडॉन क्रोध में होंगे!" जब अच्छी फसल हुई, तो उन्होंने कहा, "पृथ्वी की देवी डेमेटर खुश होंगी." हालाँकि, सभी मिथकों ने प्रकृति की व्याख्या नहीं की. लेकिन कुछ मिथकों ने हमें यूनानी इतिहास के बारे में ज़रूर बताया. उनमें से कुछ सिर्फ अच्छी कहानियाँ थीं.

यूनानी सभ्यता लम्बे समय तक चली, परन्तु वो हमेशा के लिए कायम नहीं रह पाई. लगभग 150 ई.पू. रोमनों ने यूनान पर कब्ज़ा कर लिया. रोमनों ने भी यूनानी देवी-देवताओं को अपनाया. उसके लिए उन्होंने बस उनके नाम बदलकर रोमन नाम रख दिए. (इस कहानी में रोमन नामों का उपयोग किया गया है.) अधिकांश रोमन वास्तव में देवताओं में विश्वास नहीं करते थे, लेकिन उन्हें अच्छी कहानियाँ पसंद थीं. इसलिए, वे मिथकों की कहानियां सुनाते रहे.

Pygmalion lived on the island of Cyprus.

पिगमेलियन साइप्रस द्वीप पर रहता था.

पिगमेलियन की कहानी सबसे पहले ओविड नाम के एक रोमन कवि ने लिखी थी. ओविड की सबसे प्रसिद्ध पुस्तक का नाम "मेटामोर्फोसॉज़" है. "मेटामोर्फोसॉज़" शब्द का अर्थ परिवर्तन होता है. पुस्तक की प्रत्येक कविता किसी न किसी प्रकार के बदलाव की कहानी कहती थी. इस कहानी में पिगमेलियन और उसकी मूर्ति दोनों बदल जाते हैं.

बहुत से लोगों ने पिगमेलियन की कहानी का आनंद लिया है. कलाकारों ने उसके बारे में चित्र बनाए हैं. जॉर्ज बर्नार्ड शॉ नाम के एक अंग्रेजी लेखक ने उसके बारे में एक नाटक लिखा था. आपने शायद वो फ़िल्म भी देखी होगी जो नाटक पर बनी थी. फिल्म का नाम था "माई फेयर लेडी."

बहुत समय पहले, भूमध्य सागर में साइप्रस नामक द्वीप पर पिगमेलियन नाम का एक आदमी रहता था. पिगमेलियन एक मूर्तिकार था. वो पत्थर और हाथी दांत से सुंदर मूर्तियाँ बनाता था. कभी-कभी वो वीर योद्धाओं की मूर्तियाँ बनाता था. कभी-कभी वो देवी-देवताओं की मूर्तियाँ बनाता था. कभी-कभी वो छोटे बच्चों की मूर्तियाँ भी बनाता था. पिगमेलियन की मूर्तियाँ अद्भुत होती थीं. वे वास्तविक लोगों की तरह ही दिखती थीं. कुछ लोगों को पिगमेलियन की बनाई मूर्तियां असली लोगों से भी बेहतर लगती थीं.
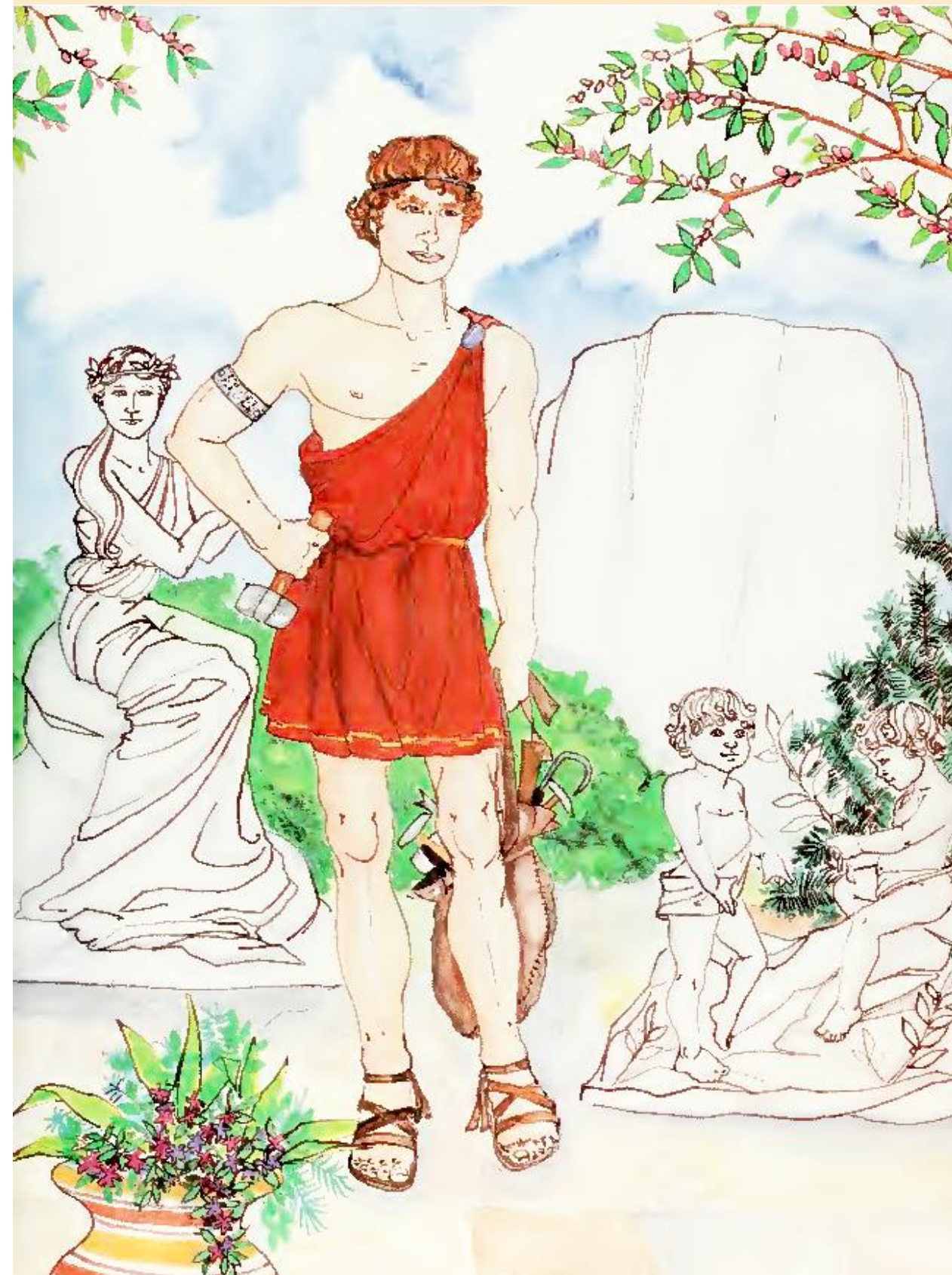
पिगमेलियन देखने में बहुत सुन्दर था. साइप्रस की कई युवतियाँ उसे पसंद करती थीं. लेकिन वो उन सभी को हमेशा नजरअंदाज करता था. उसे महिलाएं पसंद नहीं थीं.

उसने कहा, ''महिलाओं से मुझे बहुत परेशानी होती है.''

पिगमेलियन को पक्का यकीन था कि वो कभी शादी नहीं करेगा. उसने कहा, "मैं एक कलाकार हूं. परेशान करने के लिए मुझे एक पत्नी की जरूरत नहीं है. मुझे अपनी कला से प्यार है. मेरे लिए वही काफी है."

एक दिन पिगमेलियन ने एक नई मूर्ति बनाने का निर्णय लिया. उसने चमचमाते संगमरमर का एक पत्थर चुना. फिर उसने अपना छैनी-हथौड़ा उठाया और वो काम पर लग गया. उसने दिन भर काम किया और जब सूरज डूबा, तो उसने आग जलाई और फिर काम करता रहा.

पिगमेलियन को इस मूर्ति के प्रति एक विशेष अनुभूति थी. ऐसा लगभग लग रहा था जैसे वो व्यक्ति सीधे पत्थर से बाहर निकलने की कोशिश कर रहा हो. पिगमेलियन ने पहले भी बहुत सारी मूर्तियाँ बनाई थीं, लेकिन उस जैसी मूर्ती कोई भी नहीं. वो मूर्ति कुछ अलग ही थी.

पिगमेलियन ने कई दिनों तक अपनी मूर्ति पर काम किया. वो एक युवा महिला की मूर्ति थी. उसका सौम्य, बुद्धिमान चेहरा था. उसके गोल, चिकने कंधे थे. वो पतली और सुंदर थी. आग की टिमटिमाती रोशनी में ऐसा लग रहा था जैसे वो साँस ले रही हो.

कभी-कभी पिगमेलियन अपने औज़ार नीचे रख देता था और बस अपनी मूर्ति को निहारता रहता था. एक दिन वो उसे छूने के लिए आगे बढ़ा. उसे कितना अच्छा लगा! पिगमेलियन ने सोचा कि वो मूर्ती उसकी द्वारा देखी अब तक की किसी भी असली महिला से अधिक सुंदर थी.

इससे पहले कि उसे पता चलता कि क्या हो रहा है, पिगमेलियन को अपनी मूर्ति से प्यार हो गया! उसने उसे गले लगाया. उसने उसे चूमा. पिगमेलियन चाहता था कि मूर्ती भी उसे वापस गले लगाए और चूमे. लेकिन वैसा बिल्कुल नहीं हुआ. मूर्ती वहीं खड़ी रही. आख़िर वो एक मूर्ति ही तो थी.

बेचारा पिगमेलियन! उसने यह बात भूलने की बहुत कोशिश की कि वो मूर्ति कोई वास्तविक स्त्री नहीं थी. उसने मूर्ती को रानी की तरह बैंगनी और सोने के सुंदर वस्त्र पहनाए. उसने उसके लिए उपहार खरीदे - चांदी के पिंजरों में पालतू पक्षी, चतुर छोटे खिलौने, एम्बर के टुकड़े आदि.
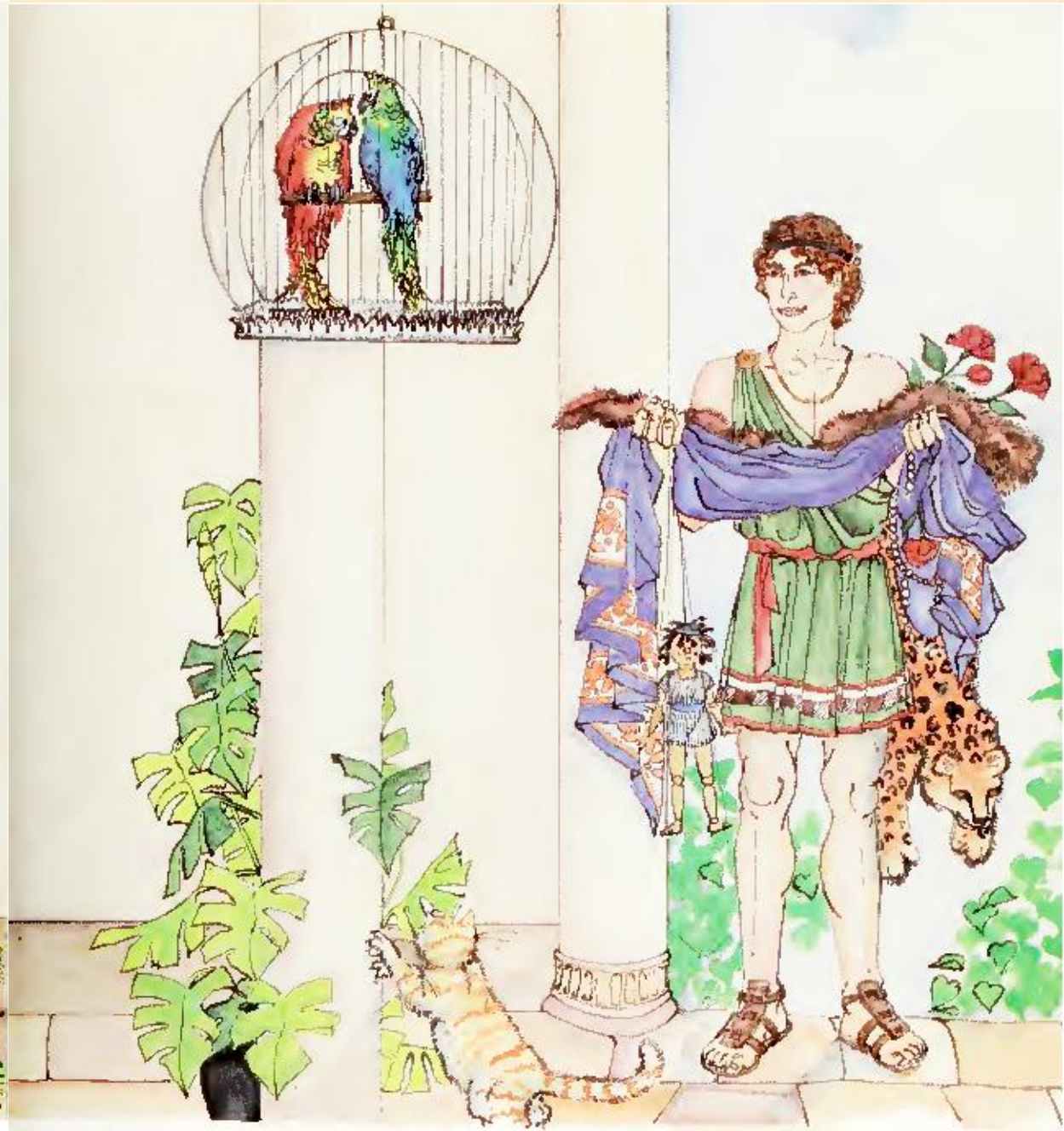
उसने मूर्ती की उंगलियों में हीरे की अंगूठियां पहनाईं. उसने उसके गले में मोती की माला पहनाई. उसने उसके कानों में माणिक की बालियाँ लटकाईं. रात में उसने मूर्ति को बिस्तर पर लिटा दिया. फिर उसने मूर्ती को फर से ढक दिया. यहां तक कि उसने मूर्ति के सिर के नीचे एक पंखों का तकिया भी रखा.
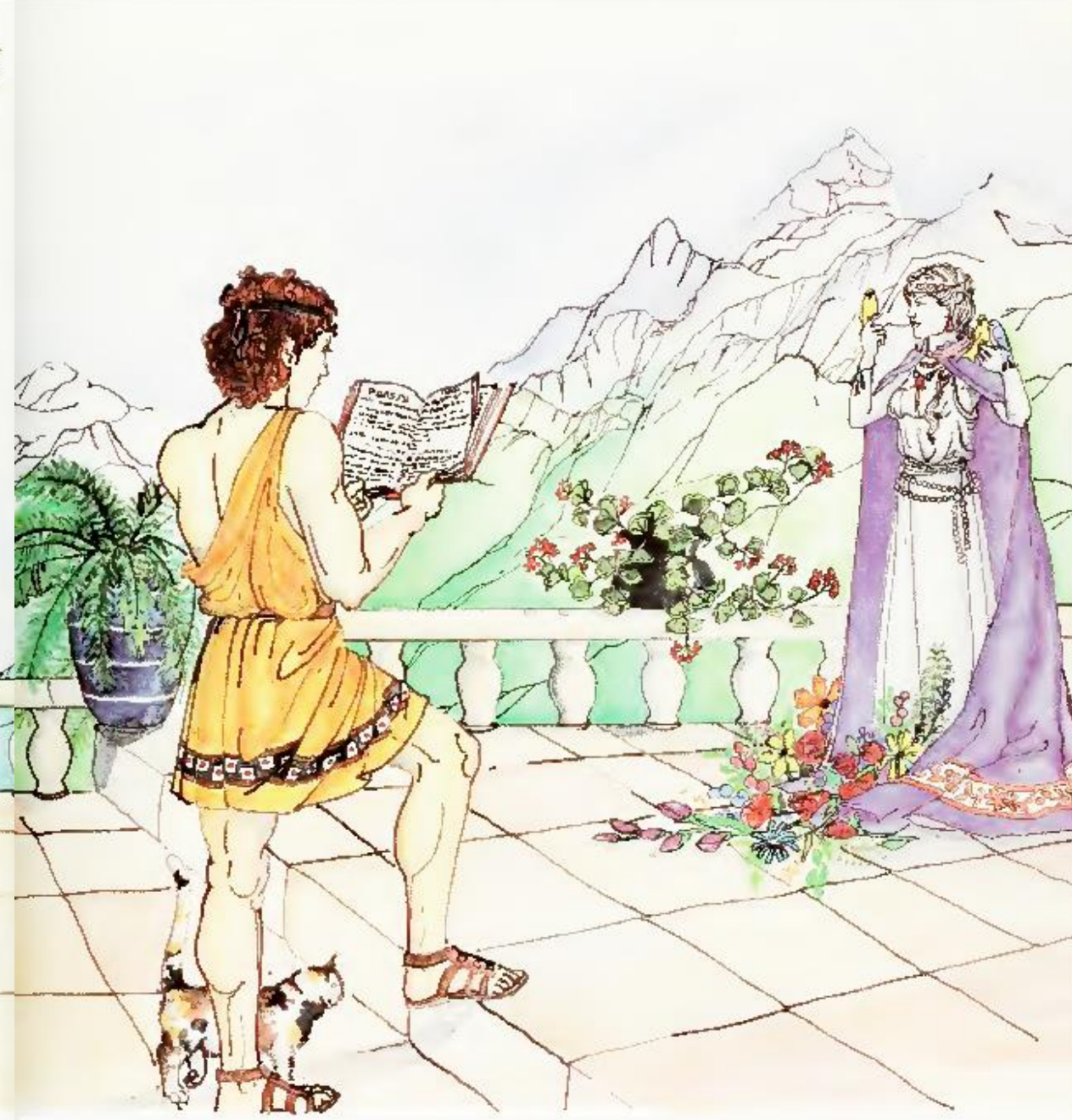
अब पिगमेलियन के औज़ार एक कोने में पड़े थे और उन पर धूल जम रही थी. उसने अब अन्य मूर्तियाँ बनाना बंद कर दी थीं. उसकी बजाए, अब वो अपना सारा समय उस मूर्ति के साथ बिताता था जिसे वो प्यार करता था. वो मूर्ती से घंटों बातें करता था. वो उसे कहानियाँ सुनाता था.

कभी-कभी पिगमेलियन को खुद पर गुस्सा भी आता था. "मैं भला इतना मूर्ख कैसे हो सकता हूँ?" वो कहता था. "मैं एक पत्थर के टुकड़े से कैसे प्यार कर सकता हूँ?" लेकिन वो फिर से अपनी खूबसूरत मूर्ति को देखता और फिर से उसके प्यार में डूब जाता था.

पिगमेलियन को लगा कि उसका प्रेम हमेशा एक रहस्य रहेगा. उसे यकीन था कि किसी और को उसके बारे में नहीं पता होगा. लेकिन देवी-देवताओं को हमेशा पता होता था कि पृथ्वी पर लोग क्या कर रहे हैं. एक दिन प्रेम की देवी वीनस ने माउंट ओलिंपस पर स्थित अपने घर से नीचे की ओर देखा. उन्होंने देखा कि पिगमेलियन को अपनी मूर्ति से कितना प्यार था,

"अच्छा अच्छा!" देवी ने मन ही मन मुस्कुराते हुए कहा. "देखो पिगमेलियन को क्या हो गया है! वो कहता था कि वो कभी किसी महिला से प्यार नहीं करेगा, और अब देखो उसे क्या मिला है. वो एक ठंडे पत्थर के टुकड़े के प्रेम में पागल हो गया है! चलो उसे अपने घमंड का सही सबक तो मिला!"

लेकिन जल्द ही वीनस, पिगमेलियन के लिए खेद महसूस करने लगीं. आख़िरकार, वो प्रेम की देवी जो थीं. वो चाहती थीं कि लोग एक-दूसरे से प्यार करें. लेकिन ये मामला कुछ अलग था. पिगमेलियन को किसी व्यक्ति से प्यार नहीं था. उसे एक पत्थर की मूर्ति से प्रेम हो गया था. लेकिन उससे कभी काम नहीं बनता!

साइप्रस के सभी लोग देवी वीनस की पूजा करते थे. वो लोगों की पसंदीदा देवी थीं. हर साल वे वीनस के लिए एक विशेष उत्सव आयोजित करते थे. पूरे साइप्रस से लोग उनकी पूजा करने के लिए आते थे. लोग वीनस की वेदी पर उनके पसंदीदा गुलाब के फूल चढ़ाते थे.
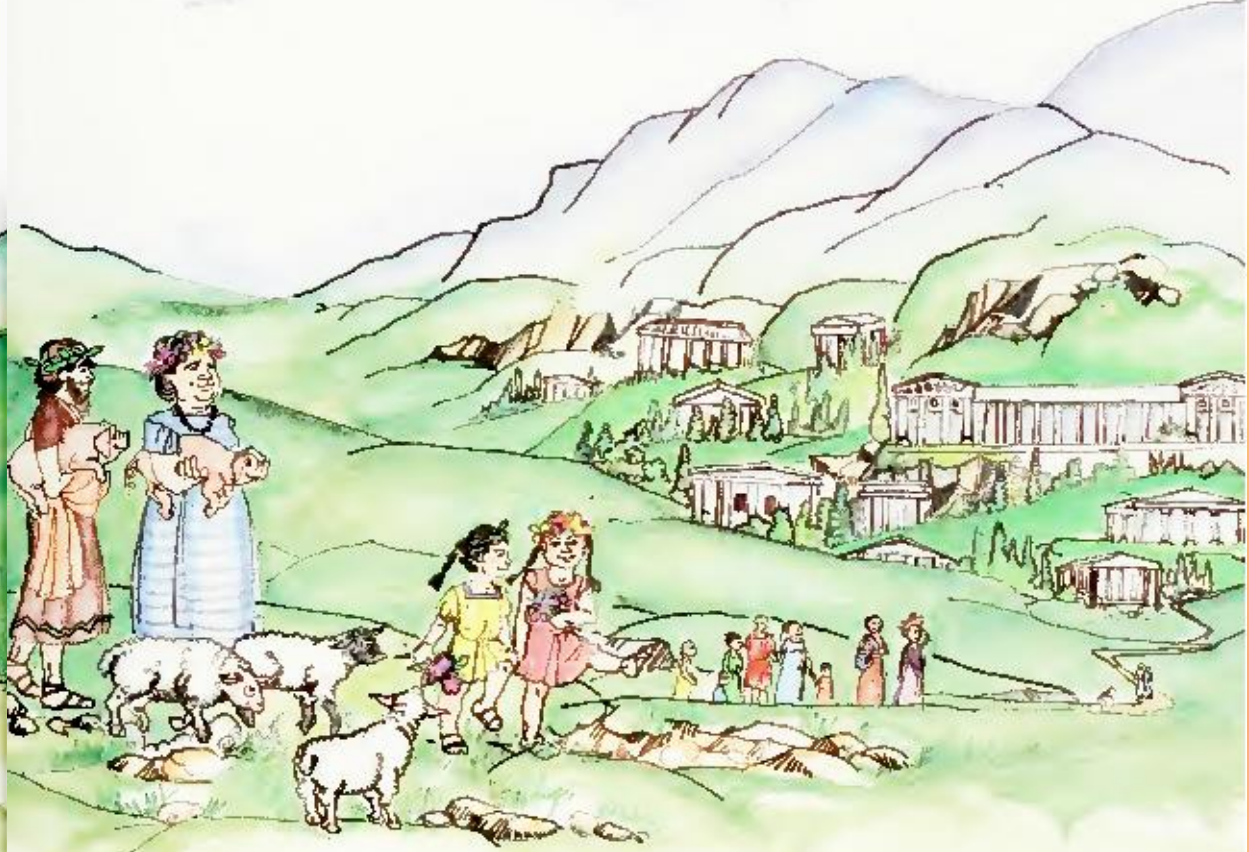
लोग वीनस के लिए सफेद गायें लाते थे जिनके सींग सोने से मढ़े होते थे. लोग पूरे दिन वीनस की प्रार्थना करते थे और पूरी रात उनके सम्मान में गीत गाते थे. अब ऐसी स्थिति आ गई थी कि पिगमेलियन एक मिनट के लिए भी अपनी मूर्ति को छोड़ने में असमर्थ था. लेकिन वो भी वीनस की पूजा करना चाहता था. वो वीनस से एक मन्नत माँगना चाहता था. इसलिए, वो भी वीनस की वेदी पर गया.

वीनस ने खुद को अदृश्य कर लिया ताकि पिगमेलियन उसे देख न सके. वीनस ने देखा कि पिगमेलियन ने उसकी वेदी पर उपहार रखा और प्रार्थना करने के लिए अपने घुटने टेके.

"कृपया मेरी प्रार्थना सुनें, प्रिय वीनस!" पिगमेलियन ने कहा. "आपको पता है कि मुझे औरतें कभी पसंद नहीं थीं. आप यह भी जानती हैं कि मैंने कहा था कि मैं कभी शादी नहीं करूंगा. लेकिन मैं अब बदल गया हूँ! मैं सचमुच में बदल गया हूँ! अब मैं शादी करना चाहता हूँ! काश... "

अचानक पिगमेलियन रुक गया. वो यह कैसे कह सकता था, "काश मैं अपनी बनाई मूर्ती से शादी कर पाता?" क्योंकि वो बहुत मूर्खतापूर्ण लगता. वीनस भी ऐसा ही सोचतीं!

पिगमेलियन ने कुछ मिनट तक सोचा. फिर उसने अपना गला साफ़ किया. उसने कहा, "काश मुझे मेरी मूर्ती जैसी कोई महिला मिलती! फिर मैं उससे ज़रूर प्यार करता! और मैं उससे शादी भी करता. मैं वादा करता हूं!"

पिगमेलियन की प्रार्थना से देवी वीनस बहुत प्रसन्न हुईं. इसलिए, उन्होंने अपनी वेदी पर जलती आग को तीन बार उछाला. पिगमेलियन ने आग की लपटों को तेज़ होते देखा. "पता नहीं उसका क्या मतलब है?" उसने खुद से कहा. "क्या वीनस ने मेरी प्रार्थना सुनी? क्या वो मेरी मन्नत पूरी करेंगी?"

उसके बाद पिगमेलियन जल्दी से घर गया. वो अब घर पहुंचने के लिए इंतजार नहीं कर सकता था. शायद, देवी वीनस ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया होगा.

पिगमेलियन भागकर अपने घर में घुस गया. उसने उत्सुकता से कमरे के चारों ओर देखा. वहां पर मूर्ती उसका इंतजार कर रही थी. उस दिन सुबह ही पिगमेलियन ने उसे एक लंबा नया वस्त्र पहनाया था और उसके गले में एक सोने की माला डाली थी. पिगमेलियन ने उसके बालों में फूल भी लगाए थे. पिगमेलियन को मूर्ती बहुत सुंदर लग रही थी. लेकिन वो अभी भी एक पत्थर की मूर्ति ही थी. वो एक ठंडे पत्थर का टुकड़ा थी. पिगमेलियन की कोई भी कोशिश उस असलियत को कभी नहीं बदल सकती थी.

पिगमेलियन को बहुत दुख हुआ. वो धीरे-धीरे अपनी मूर्ती के पास गया. उसने उसके चिकने गाल को छुआ. उसने उसकी उंगलियों में अंगूठियां और पैरों में छोटी-छोटी चप्पलें देखीं. उसने अपनी बाहें मूर्ती के चारों ओर डाल दीं. उसे लगा कि उसका दिल टूट जाएगा.

"यह बेहद निराशाजनक है!' पिगमेलियन रोया. "मुझे देवी वीनस से ऐसी असंभव मन्नत माँगने की गलती नहीं करनी चाहिए थी!''
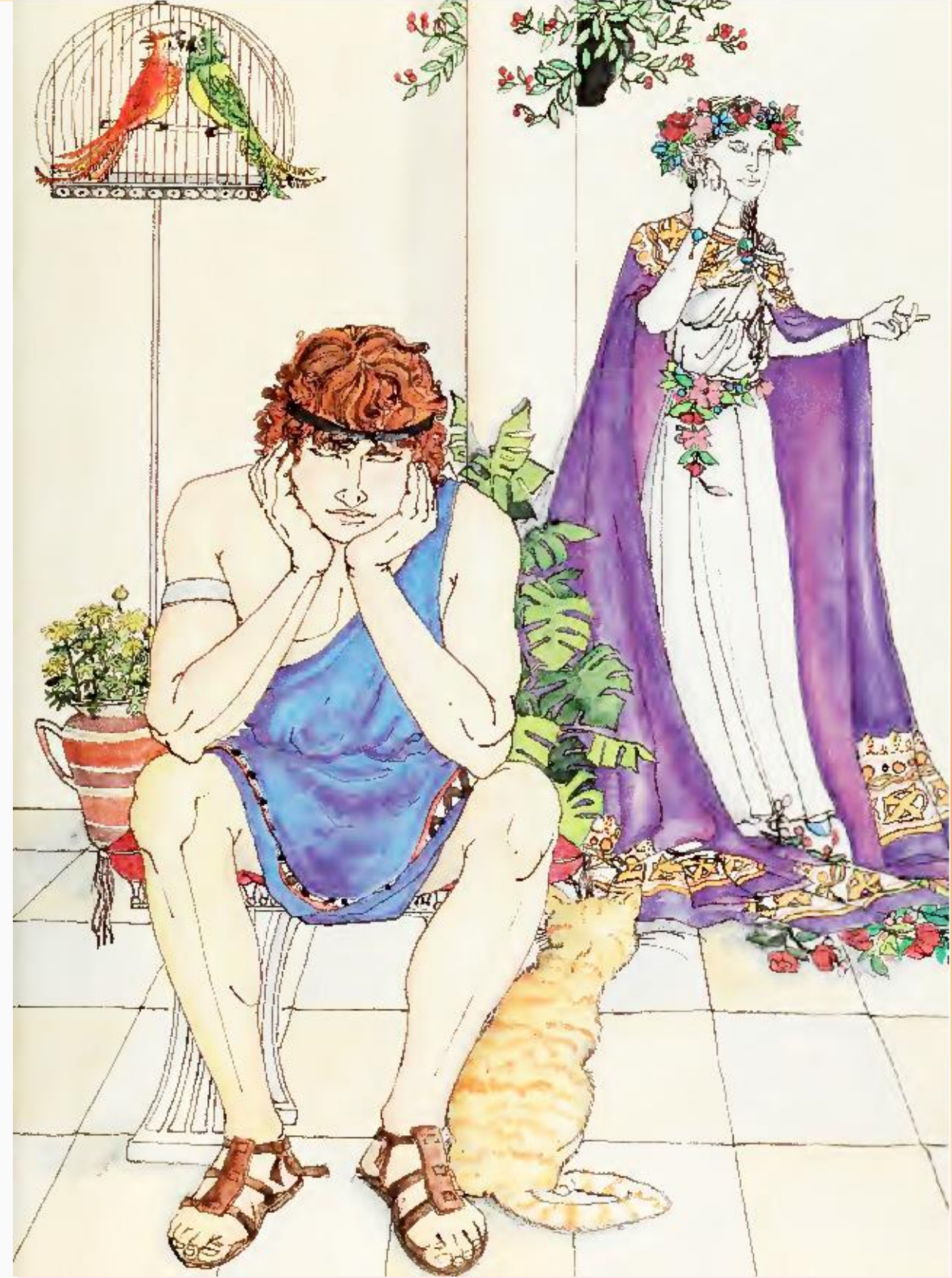
ज़रा रुको! क्योंकि कुछ अजीब हो रहा था! क्या मूर्ति वाकई में सांस ले रही थी? क्या मूर्ती कुछ हिल रही थी? क्या मूर्ती भी पिगमेलियन के चारों ओर अपनी बाहें डालने की कोशिश कर रही थी?

पिगमेलियन पीछे हट गया. ऐसा लग रहा था जैसे मूर्ति ठीक उसी की ओर देख रही हो. और फिर मूर्ती ने अपनी पलकें झपकाईं! वो देखकर, पिगमेलियन को अपनी आँखों पर विश्वास ही नहीं हुआ.

उसकी मूर्ति अब एक वास्तविक महिला बन गई थी! वो मुस्कुराते हुए पिगमेलियन की ओर बढ़ी. जल्द ही पिगमेलियन ने उसकी कोमल सांसों को अपने गालों पर महसूस किया. उसके बाल रेशम की तरह थे, और उनमें फूलों की सुगंध थी. पिगमेलियन कभी इतना खुश नहीं हुआ था. देवी वीनस ने उसकी प्रार्थना सुन ली थी!

निःसंदेह, पिगमेलियन ने देवी वीनस से किया अपना वादा निभाया. उसने उस महिला से शादी की - उसका नाम गैलाटिया था - और देवी वीनस, उन दोनों की शादी में आईं. एक साल बाद उनकी एक बेटी हुई. उन्होंने उसे पाफोस नाम दिया. साइप्रस में पाफोस के नाम पर एक नगर है जो आज भी वहाँ मौजूद है.

अंत